• कविताएं...

अपना घर

अपने घर की बात अलग है
लगता है घर प्यारा
कच्चा-पक्का ऊंचा-नीचा
सायबान ओसारा
छत लगती है इंद्रलोक-सी
आंगन बागों जैसा
दरवाजे, घर का चबूतरा
मीठे रागों जैसा
चिड़ियां साथिन होतीं, जिनसे
घर गूंजता हमारा
दिल्ली है, बंबई शहर है
भवन बीस तल वाले
आसमान को छूते हैं ये
लगते बड़े निराले
मगर खुशी की तो बहती है
अपने ही घर धारा
घर का हर कमरा-बरामदा
हर खिड़की-दरवाजा
जैसे हर क्षण हमें बुलाते
कहते आ जा, आ जा
घर में मां है, थपकी देती
सो जा राजदुलारा
बाहर अगर कहीं जाते हैं
घर की यादें आतीं
बहुत दूर हों, तब तो अक्सर
आंखें भर-भर जातीं
घर खिल-खिल हंसने लगता है
ज्यों संसार हमारा
अपने घर की बात अलग है
लगता है घर प्यारा।

■ श्रीप्रसाद

अखबार

जिस दिन होता है इतवार,
घर में आते ही अखबार,
ऐसी छीन-झपट मचती
हो जाते हैं हिस्से चार!
पापा को खबरों का चाव,
मां पढ़ती दालों के भाव,
भैया खेलों में रमते,
भाता मुझे बनाना नाव।

■ बालस्वरूप राही

• चुटकुला...

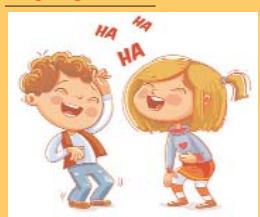

बंता (संता से): यार, तेरी पत्नी हमेशा तुझसे लड़ाई क्यों करती है?
संता : क्या बताऊं भाई, मेरी किस्मत ही खराब है।
बंता : पर हुआ क्या?
संता : कल मैंने उससे पूछा, 'तुम मेरी जिंदगी में क्या हो?' तो उसने कहा- 'दुर्घटना!'

• जानकारी...

क्या है स्ट्रेट ऑफ जिब्राल्टर

समुद्र का एक बेहद संकरा सा रास्ता आज वैश्विक राजनीति का बड़ा केंद्र बन चुका है। स्ट्रेट ऑफ जिब्राल्टर, जो यूरोप और अफ्रीका महाद्वीप को अलग करता है, इन दिनों अवैध घुसपैठ की खबरों के कारण चर्चा में है। मोरक्को के रास्ते स्पेन और फिर वहां से पूरे यूरोपीय संघ में शरणार्थियों के प्रवेश को लेकर यूरोपीय देशों में तीखी राजनीतिक बहस छिड़ गई है. लोगों के मन में सवाल है कि क्या शरणार्थी 14 किलोमीटर चौड़े इस गहरे समुद्री जलडमरूमध्य को तैरकर पार कर रहे हैं या घुसपैठ का गणित कुछ और है। आइए समझते हैं यह क्या है और यहां से कैसे यूरोप में घुसपैठ होती है।

यूरोप के कई देशों में शरणार्थियों को पनाह देने की नीति का विरोध तेज हो गया है। यूरोपीय संघ के देशों के बीच सीमाओं पर कोई स्थायी सैन्य जांच नहीं होती, जिससे एक देश में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पूरे यूरोप में कहीं भी आ-जा सकता है. राजनीतिक दलों का तर्क है कि यदि स्पेन अपनी सीमाओं पर सख्ती नहीं बरतता है, तो अफ्रीका और एशिया से आने वाले लोग पूरे यूरोप की जनसांख्यिकी और सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करेंगे। यही कारण है कि जिब्राल्टर जलडमरूमध्य का यह इलाका अचानक अंतरराष्ट्रीय मीडिया की सुर्खियों में आ गया है।

भूगोलिक दृष्टि से देखें तो उत्तर में स्पेन (यूरोप) और दक्षिण में मोरक्को (अफ्रीका) स्थित हैं. इन दोनों के बीच स्थित पानी का संकरा समुद्री रास्ता 'स्ट्रेट ऑफ जिब्राल्टर' कहलाता है। नक्शे पर दोनों तटों के बीच की सबसे कम दूरी केवल 14 किलोमीटर दर्ज की गई है। इस आंकड़े को देखकर आम तौर पर यह गलतफहमी हो जाती है कि शरणार्थी अफ्रीका से यूरोप पहुंचने के लिए 14 किलोमीटर का पूरा खुला और तूफानी समुद्र तैरकर पार करते हैं, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग और काफी दिलचस्प है।

अवैध प्रवेश का असली राज इस बात में छिपा है कि अफ्रीका महाद्वीप की मुख्य भूमि पर भी स्पेन का कानूनी नियंत्रण है. स्पेन के दो छोटे शहर- सेउता और मेलिया भौगोलिक रूप से पूरी तरह अफ्रीका के मोरक्को से घिरे हुए तटवर्ती क्षेत्र हैं। यानी ये दोनों शहर कोई द्वीप नहीं हैं, बल्कि तीन तरफ से मोरक्को की जमीन और एक तरफ से समुद्र से जुड़े हैं। अफ्रीका की धरती पर होने के बावजूद ये दोनों शहर कानूनी और प्रशासनिक रूप से स्पेन के मुख्य भूभाग का हिस्सा माने जाते हैं।

इन दोनों शहरों पर स्पेन का अधिकार कोई नया घटनाक्रम नहीं है। आंकड़ों के अनुसार स्पेन ने 1497 में मेलिया पर अपना नियंत्रण स्थापित किया था, जब आधुनिक मोरक्को एक संगठित राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में भी नहीं था। वहीं सेउता पर 1415 में पुर्तगाल ने कब्जा किया था। जब 1580 से 1640 के बीच स्पेन और पुर्तगाल एक ही शासन के अधीन आए, तब सेउता स्पेन से जुड़ा। 1640 में दोनों देशों के अलग होने पर सेउता के नागरिकों ने स्पेन के साथ रहने का ऐतिहासिक फैसला किया।

• ब्रिटिश कहानी

जादूगर मलकान

एक दिन गाँव वाले पहाड़ी पर लकड़ी काटने गए तो वहाँ लकड़ी के बने सिपाही दिखाई दिए। गाँव वालों को शरारत सूझी। उन्होंने लकड़ी का एक संदूक बनाया। उसे पहाड़ी पर रख दिया। संदूक का ढक्कन खुला हुआ था।

लकड़ी के दो सिपाही उछलते-कूदते वहाँ आए और संदूक में घुसकर देखने लगे। तभी छिपकर गाँव वालों ने रस्सी से संदूक का ढक्कन बंद कर दिया। लकड़ी के सिपाही कैद हो गए...

गतांक से आगे...

उस रात पहाड़ी के अंदर से जोर की आवाजें आती रहीं। रुडी ने गाँव वालों को इकट्ठा किया। तय हुआ कि जल्दी-से-जल्दी पहाड़ी पर लगे पेड़ काट लिये जाएँ। लकड़ी गाँव में इकट्ठी कर ली जाए। फिर दिक्कत नहीं होगी। रुडी और गाँव वाले रात को ही पहाड़ी पर जाकर लकड़ियाँ काटने लगे। जल्दी ही उन्होंने काफी लकड़ियाँ गाँव में इकट्ठी कर लीं। इस बीच पहाड़ी का खिसकना भी जारी रहा।

एक दिन गाँव वाले पहाड़ी पर लकड़ी काटने गए तो वहाँ लकड़ी के बने सिपाही दिखाई दिए। गाँव वालों को शरारत सूझी। उन्होंने लकड़ी का एक संदूक बनाया। उसे पहाड़ी पर रख दिया। संदूक का ढक्कन खुला हुआ था।

लकड़ी के दो सिपाही उछलते-कूदते वहाँ आए और संदूक में घुसकर देखने लगे। तभी छिपकर गाँव वालों ने रस्सी से संदूक का ढक्कन बंद कर दिया। लकड़ी के सिपाही कैद हो गए।

गाँव वाले संदूक को अपने गाँव में ले आए। रात काफी हो रही थी। लकड़ी के पुतलों को एक कोठरी में बंद कर दिया गया। रात को गाँव के लोग सो गए। लेकिन वे यह भूल गए थे कि खिलौने जादुई हैं।

गाँव वालों के सो जाने के बाद लकड़ी के पुतले संदूक से बाहर निकल आए। वे इधर-उधर घूमने लगे। उन्होंने देख लिया कि गाँव में लकड़ियों का बहुत बड़ा ढेर लगा हुआ था। पुतलों ने माचिस उठाई। कुछ फूस इकट्ठा किया और लकड़ियों में आग लगा दी। लकड़ियाँ धू-धू करके जल उठीं। गाँव वालों की नींद खुली तो काफी लकड़ियाँ जल चुकी थीं।

पहले तो कोई कुछ समझ नहीं पाया। फिर लकड़ी के पुतलों की तलाश शुरू हुई तो वे नजर न आए। अब पता चला, वह मलकान के जादू की शरारत थी।

इस घटना से रुडी बहुत दुखी हुआ। उसे लगा जैसे यह सब उसी की गलती से हुआ है। सुबह-सुबह वह कुल्हाड़ी लेकर पहाड़ी पर चढ़ गया। इतने दिनों में मलकान ने पहाड़ी को गाँव से काफी दूर खिसका दिया था। अब जमीन में जगह-जगह दरारें नजर आती थीं। ठीक उसी समय मलकान पहाड़ी के अंदर अपने महल में बैठा था। दोनों पुतले उसे अपनी करतूत सुना रहे थे। तभी मलकान ने अपने जादू के जोर से जान लिया, रुडी अकेला पहाड़ी पर आया है। उसने हाथ हिलाया तो पहाड़ी में एक गहरी दरार पड़ गई। रुडी फिसलकर उस दरार में गिर पड़ा।

जब रुडी नहीं लौटा तो गाँव वाले उसे ढूँढ़ने निकले। उसका पता कैसे चलता? मलकान के बनाए लकड़ी के पुतलों ने रुडी को पकड़ा और एक गुफा में कैद कर दिया। वे सब एक ऐसी भाषा बोल रहे थे, जिसे रुडी बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था। तभी लकड़ी के पुतले एकदम सीधे खड़े हो गए। वे दरवाजे की ओर देखने लगे। रुडी ने देखा, सामने से जादूगर मलकान आ रहा था।

रुडी को कैद में देखकर मलकान जोर-जोर से हँसने लगा। बोला, ''रुडी, राजा तुम्हारे खिलौने को प्रथम पुरस्कार तो दे सकते हैं, पर तुम्हें मेरे जादू से नहीं बचा सकते। तुम अपने प्राण बचाना चाहते हो तो मेरा कहना मानो। वरना मैं पूरे गाँव को तहस-नहस कर दूँगा।''

रुडी ने हिम्मत नहीं हारी। बोला, ''मलकान, मैं तुम्हारी धमकियों से डरने वाला नहीं! मेरे हाथों की ताकत तुम्हारे जादू से बढ़कर है।''

''ऐसा!'' मलकान हँस पड़ा। फिर बोला, ''आओ, तुम्हें एक अजूबा दिखाऊँ!'' रुडी को वह एक विशाल कमरे में ले गया। वहाँ सतरंगा प्रकाश फैला हुआ था। धम-धम की आवाज भी हो रही थी। गुफा की दीवार में एक बहुत बड़ा ताला बना हुआ था। आवाज उसी से आ रही थी।

मलकान ने कहा, ''रुडी, इस ताले के पीछे एक घड़ी है। यह घड़ी की आवाज है। जब तक घड़ी चलती रहेगी, पहाड़ी तुम्हारे गाँव से परे खिसकती रहेगी।

-जारी

• रोचक...

बुलेट ट्रेन

जापान की बुलेट ट्रेन यानी शिंकानसेन दुनिया की सबसे तेज ट्रेनों में से एक है। यह करीब 320 किलोमीटर प्रति घंटा की स्पीड से चलती है, लेकिन पहले यह ट्रेन बहुत तेज और परेशान करने वाली आवाज करती थी। जिसकी वजह से अधिकतर लोगों को दिक्कत होती थी। इस दिक्कत को दूर करने के लिए इंजीनियरों ने एक अनोखा तरीका सोचा। उन्होंने आइडिया लिया किंगफिशर पक्षी से। उन्होंने गौर किया कि किंगफिशर पक्षी जब पानी में तेजी से गोता लगाकर मछली पकड़ता है, तो पानी में बिना आवाज के अंदर चला जाता है। ऐसा उसकी चोंच के खास आकार की वजह से होता है। उसकी चोंच लंबी, पतली और नुकीली होती है, जो हवा और पानी को आसानी से चीर देती है। इंजीनियरों ने यही आइडिया लिया और ट्रेन के अगले हिस्से यानी नाक का डिजाइन बदल दिया। अब ट्रेन का अगला हिस्सा किंगफिशर की चोंच जैसा लंबा और नुकीला बना दिया गया, ताकि सुरंग में घुसते समय हवा आसानी से किनारे हो जाए और तेज आवाज न हो।

• ब्लैक मांबा

तेज रफ्तार, जानलेवा जहर और बेहद हमलावर तेवर, यह तीनों खूबियां जिस सांप में एक साथ मिलती हैं, उसका नाम है ब्लैक मांबा। अफ्रीका के इस सांप को धरती का सबसे तेज और सबसे खतरनाक सांप माना जाता है, और इसकी वजह सिर्फ रफ्तार नहीं, बल्कि शिकार करने का इसका बेहद शातिर तरीका भी है। ब्लैक मांबा करीब 12.5 मील प्रति घंटे यानी 20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से रेंग सकता है, जो इसे दुनिया का सबसे तेज सांप का दर्जा रखता है। लेकिन इसकी असली ताकत सिर्फ स्पीड में नहीं, बल्कि खामोशी से शिकार को दबोचने की चालाकी में छिपी है।